मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 3

MTT–044

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.टी.टी.-044 : अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि :

सिंधी-हिंदी-सिंधी का संदर्भ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या **1** से **8** तक किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर लगभग **750** शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए और प्रश्न संख्या 9 की संक्षिप्त टिप्पणियाँ लगभग **350** शब्दों (प्रत्येक) में लिखिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

---

1. 'अनुवादक के भ्रामक मित्र' (false friends of translators) की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। शब्दानुवाद के संदर्भ में भ्रामक मित्रों से बचने की सलाह क्यों दी जाती है ? चर्चा कीजिए। 20

2. पुनरीक्षण से आप क्या समझते हैं ? पुनरीक्षण की प्रक्रिया से संबंधित कार्यों का विवरण दीजिए। 20

3. अनुवादक से की जाने वाली आशाओं-अपेक्षाओं का वर्णन कीजिए। 20

4. 'लिप्यंकन और लिप्यंतरण' पर निबंध लिखिए। 20

5. पार्श्व वाचन क्या है ? पार्श्व वाचन और अनुवाद में अंतर्संबंध एवं अंतर स्पष्ट कीजिए। 20

6. अर्ध-स्वचालित मशीनी अनुवाद के विविध प्रकारों की व्याख्या कीजिए। 20

7. कोश निर्माण क्यों आवश्यक है ? सिंधी भाषा की कोश निर्माण प्रक्रिया का वर्णन कीजिए। 20

8. पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विचार-दृष्टियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 20

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर लगभग **350** शब्दों (प्रत्येक) में संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : $2\times10=20$

(क) देश-विभाजन के पश्चात् सिंधी पारिभाषिक शब्दावली का विकास

(ख) सिंधी कोश साहित्य के उद्‌भव की पृष्ठभूमि और उसका प्रथम शब्दकोश

(ग) सारानुवाद की प्रक्रिया

(घ) सबटाइटलिंग का महत्व और सीमाएँ

× × × × ×